कामचोर

पाठ का सार -
प्रस्तुत कहानी में लेखक ने घर के सभी बच्चों के स्वभाव के बारे में बताया है। काफी वाद-विवाद और आपसी सलाह के बाद यह तय हुआ कि बच्चे अब घर के कामों में हाथ बटाएँगे और नौकरों को निकाल दिया जाए। ऐसा इसलिए कहा गया था ताकि बच्चे जो समय शरारत करने में व्यर्थ करते हैं उस समय वे कुछ काम कर लें और आत्मनिर्भर बन सके । साथ ही साथ यह फैसला भी सुनाया कि जो काम नहीं करेगा उसे रात का खाना नहीं दिया जाएगा। परंतु बच्चे कठिन से कठिन काम में भी अपनी मस्ती और शरारत करना नहीं भूलते। एक के बाद एक वे घर के सभी काम को बर्बाद कर देते हैं और पूरा घर तहस नहस कर देते हैं। सबसे पहले उन्होंने दरी की सफाई करना सुरू कर दिया। नतीजा यह हुआ कि जो धूल दरी में थी वो धूल घर के कोने-कोने में फैल गई। खाँस-खाँस कर लोगों का बुरा हाल हो गया था। सभी का सिर और चेहरा धूल से भर गया था। इसके बाद जब बच्चों ने घर की सफाई करना शुरु किया तो झाड़ के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। जब पौधों में पानी देने निकले तो घर के सभी बर्तनों को इधर-उधर फैला दिया। पानी भरने के लिए सभी बच्चे एक दूसरे को धक्का देने लगे। सारा पानी तो बर्बाद हुआ ही साथ ही साथ बगीचा और घर भी कीचड़ से भर गया। सभी बच्चों ने अपने कपड़े भी गंदे कर लिए। घर वालों को तो दोगुनी मेहनत करनी पड़ी, काम भी और सफाई भी। अंततः यह तय हुआ कि सफाई का काम वे नहीं कर सकते, बाकि का काम उनसे करवाया जाए बच्चे मूर्गियों की देखभाल करने के काम में जुट गए इस काम को करते समय भी बच्चों ने घर में तूफान मचा दिया। इसी प्रकार हर एक काम को भी करने में उन्होंने सिर्फ बर्बादी ही मचाई। अंततः यह निश्चय हुआ कि अगर किसी बच्चे ने घर का कोई भी काम किया तो उन्हें रात का खाना नहीं मिलेगा। बच्चे भी यह सोच रहे थे कि बड़े कभी इस बात पर नाराज़ होते हैं कि वे काम नहीं करते और कभी इस बात से नाराज़ होते हैं कि काम क्यों किया। अतः बच्चों ने यह फैसला लिया कि वे अब काम नहीं करेंगे।

बच्चों की चारित्रिक विशेषताएँ -
(1) शरारती , उधम मचाने वाले - जैसा कि बच्चों का स्वभाव है शरारत करना। ये बच्चें भी बहुत शरारती हैं। किसी भी कार्य को गम्भीरता पूर्वक नहीं लेते हैं, बल्कि हर कार्य को खेल समझते हैं।
(2) कार्य करने के इच्छुक –पाठ में जिन बच्चों का उल्लेख किया गया है उन्हें भले ही सफाई से कार्य करना नहीं आता लेकिन किसी भी कार्य को करने हेतु वे बहुत ही उत्साहित रहते हैं। कार्य करने के प्रति उनका उत्साह अत्यंत सराहनीय है।
(3) प्रयत्नशील - बच्चों को कार्य करना भले ही न आए परंतु नए कार्य को करने का प्रयत्न अवश्य करते हैं।
(4) गैरज़िम्मेदार - कम उम्र होने के कारण बच्चों में अभी बड़ों की तरह ज़िम्मेदारी की भावना की कमी है। वो बस मौज-मस्ती के लिए कार्य करते हैं।
(5) ज़िद्दी - अपने स्वभाव के अनुसार बच्चे अपनी इच्छानुसार काम करने के लिए ज़िद भी करते हैं। अपनी मर्ज़ी चलाने के लिए बच्चे आपस में ही लड़-झगड़ लेते हैं और परिणाम स्वरूप पूरा घर तहस-नहस हो जाता है।

पाठ का उद्देश्य -
(1) किसी भी कार्य को करने के लिए उत्साहित रहना चाहिए।

(2) कार्य को सफलता पूर्वक करने की कोशिश करनी चाहिए।
(3) कार्य को करने के लिए अनुभव होना चाहिए

पाठ का संदेश -
प्रस्तुत पाठ के माध्यम से लेखक ने हमें यह संदेश दिया है कि किसी भी कार्य को करने के लिए हमें प्रयत्नशील रहना चाहिए। किसी भी कार्य को हम तभी सफलता पूर्वक कर सकते हैं जब हमारे पास उस कार्य को करने का अनुभव हो या किसी अनुभवी की मदद ली जाए। बिना समझदारी के वह कार्य कभी सफल नहीं हो सकता।